इकाई 5 मार्क्स और वेबर

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में समाजशास्त्र के संस्थापक कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर के विचारों पर चर्चा की जाएगी। इन दोनों दार्शनिकों ने समाजशास्त्रीय चिंतन में बड़ा ही सार्थक योगदान किया है। मगर यहां हम उनके योगदान के एक ही पक्ष सामाजिक स्तरीकरण पर अपनी चर्चा केन्द्रित करेंगे। दोनों दार्शनिकों के इस विषय पर सुस्पष्ट विचार हैं, हालांकि दोनों के विचार समान नहीं हैं। इस इकाई को पढ़ लेने के बाद आप:

- समझ जाएंगे कि समाज में वर्ग किस तरह से उभरते हैं;
- वर्ग निर्माण के आधार को समझ पाएंगे;
- सामाजिक स्तरीकरण में वर्गों की भूमिका; और
- वर्गों को लेकर मार्क्स और वेबर के बीच समानताओं और मतांतरों को जान पाएंगे।

5.1 प्रस्तावना

कार्ल मार्क्स (1818-1881) की गिनती अब तक के सबसे महान दार्शनिकों में होती है। उनके विचारों ने लोगों, वर्गों और राष्ट्रों को प्रभावित किया है। समाज और सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने में मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकतावादी सिद्धांत का बड़ा योगदान रहा है। इसने पारंपरिक दृष्टिकोणों का एक आमूल परिवर्तनवादी विकल्प को विश्व के सामने प्रस्तुत किया। सामाजिक विकास को मार्क्स ने वर्ग द्वंद्व के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया था। सामाजिक स्तरीकरण उनके विश्लेषण की धुरी था। सामाजिक स्तरीकरण उनकी दृष्टि में एक ओर एकीकारी संरचना के बजाए विघटनात्मक है, मगर वहीं वह इसे सामाजिक विकास के लिए अपरिहार्य मानते हैं।

मैक्स वेबर (1864-1920) एक और अद्वितीय दार्शनिक रहे हैं। कार्ल मार्क्स की तरह वेबर ने भी बुनियादी आर्थिक पहलुओं के महत्व को माना था। मार्क्स ने अपना ध्यान मुख्य रूप से श्रमिक वर्गों पर लगाया और सामाजिक विकास को उन्हीं की नजर से देखा था। मगर वेबर ने अपने दर्शन में सामाजिक विकास में संपत्ति-संपन्न वर्गों की भूमिका को महत्व दिया था, इसीलिए वेबर को बुर्जुई मार्क्स कहा जाता है। इस इकाई में हम सामाजिक स्तरीकरण पर मार्क्स और वेबर के विचारों पर अलग-अलग

चर्चा करेंगे। इसके बाद हम सामाजिक स्तरीकरण व्यवस्था को समझने में वर्ग के विश्लेषण के महत्व पर चर्चा करेंगे।

5.2 सामाजिक स्तरीकरण और मार्क्स

सामाजिक परिवर्तन को समझने और उसकी व्याख्या करने के लिए मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकतावाद का सिद्धांत अपनाया। उनके विचार में इतिहास का पहला प्रस्थान बिंदु मानव का अस्तित्व में होना था। मानव समाज का भौतिक गठन और मनुष्यों का प्रकृति से संबंध विकास के महत्वपूर्ण द्योतक हैं। सभी प्राणी जीवित रहने के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। पेड़ पौधे मिट्टी और पानी के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं, गाय घास के लिए प्रकृति पर आश्रित रहती है तो शेर को जीवित रहने के लिए अन्य जंतुओं का शिकार करना पड़ता है। जीवित रहने के लिए मनुष्य भी प्रकृति पर निर्भर रहता है। मगर मनुष्य और अन्य प्राणियों में यही बुनियादी अंतर है कि वह अपने जीवन के लिए प्रकृति का कायापलट कर सकता है। मगर अन्य प्राणियों को प्रकृति के अनुकूल ढलना पड़ता है। गाय घास खाती है मगर उसे उगा नहीं सकती। इधर मनुष्य प्रकृति का दोहन तो करता है मगर उसमें इसकी कायापलट की शक्ति भी होती है। इसका सीधा सा मतलब यह है कि मनुष्य में अपनी आजीविका के साधन उत्पन्न करने की क्षमता होती है। मार्क्स इसलिए अपनी पूस्तक *जर्मन आइडियोलजी* में कहते हैं: "मनुष्य को उसकी चेतना, धर्म या किसी भी चीज से पशुओं से अलग किया जा सकता है। मनुष्य जैसे ही अपने जीवन-निर्वाह के साधन उत्पन्न करने लगता है वह अपने आपको पशुओं से अलग करके देखने लगता है। यह चरण उसकी शारीरिक स्थिति निर्धारित करती है। जीवन-निर्वाह के वास्तविक साधन उत्पन्न करके मनुष्य परोक्ष रूप से अपने वास्तविक भौतिक जीवन का सृजन करता है।" इसी उत्पादन के जरिए ही मनुष्य का विकास हुआ। आदिम मनुष्य पूरी तरह से प्रकृति पर ही निर्भर था। इसका कारण यह था कि उसका जीवन-निर्वाह शिकार या भोजन संग्रहण से ही होता था। ये आदिम समाज जीवित रहने के लिए अपनी न्यूनतम जरूरतें पूरी कर पाते थे। मनुष्य ने प्रकृति को अपने उपयोग के लिए रूपांतरण करना शुरू किया तो मानव समाज में लोगों के निर्वाह के लिए अधिक उत्पन्न करने की क्षमता आई।

5.2.1 श्रम का विभाजन

प्रौद्योगिकी या टेक्नोलॉजी के विकास के जरिए मनुष्य ने कृषि को उन्नत किया और इससे उसने स्थायी रूप से बसे समुदायों का निर्माण किया। उत्पादन के बढ़ने पर ये समुदाय अपनी आवश्यकताओं से अधिक उत्पन्न करने लगे। इस बेशी उत्पादन के फलस्वरूप उन लोगों का निर्वाह करना संभव हो गया जो भोजन के उत्पादन से जुड़े नहीं थे। आरंभिक समाजों में सभी लोग एक प्रकार के क्रिया-कलापों में लगे रहते थे जो उनके अस्तित्व के लिए जरूरी थे। जैसे रोटी, कपड़ा और मकान। बेशी उत्पादन से अब अन्य लोगों के लिए अपने क्रिया-कलापों को इन बुनियादी जरूरतों से आगे फैलाना संभव हो पाया। इसलिए कुछ लोगों ने भोजन उत्पन्न किया जो सभी के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त थे तो अन्य लोग दूसरी गतिविधियों में लग गए। इसे ही श्रम का विभाजन कहा गया।

इस व्यवस्था के फलस्वरूप कुछ लोगों ने अन्य लोगों की इस प्रक्रिया से अलग छिटककर उत्पादन के साधनों पर अधिकार जमा लिया। इस तरह जो संपत्ति अभी तक सभी के सामूहिक स्वामित्व में थी वह चंद लोगों के हाथों में चली गई जिससे निजी संपत्ति की धारणा उत्पन्न हुई। इसके बाद सभी लोगों के हित साझे नहीं रहे। हितों में अब तरह-तरह के अंतर आ गए। इस प्रकार व्यक्तियों के निजी हित समुदायिक हितों से बिल्कुल भिन्न हो गए। मार्क्स कहते हैं, "श्रम का विभाजन और निजी संपत्ति समरूप अभिव्यक्तियां हैं। इसका निजी और सामूहिक हितों में अंतर्विरोध था।"

मानव समाज में निजी संपत्ति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली विषमता से वर्गों का निर्माण होता है। यही वर्ग सामाजिक स्तरीकरण का आधार बनते हैं। सभी स्तरित समाजों में मोटे तौर पर प्रायः दो समूह मिलते हैं: शासक वर्ग और शासित वर्ग। इसके फलस्वरूप इन दोनों वर्गों के बीच अपने-अपने हितों को लेकर बुनियादी द्वंद्व उत्पन्न होता है। अपनी अन्य प्रसिद्ध कृति *कंट्रीब्यूशंस ऑफ द क्रिटीक*

ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी में मार्क्स कहते हैं कि समाज की विभिन्न संस्थाएं जैसे कानूनी और राजनीतिक व्यवस्थाएं, धर्म इत्यादि असल में शासक वर्ग के वर्चस्व का माध्यम हैं और ये उसके हितों को साधने का काम करती हैं। आइए, अब यह जाने कि 'वर्ग' का क्या मतलब है।

5.2.2 वर्ग का तात्पर्य

मार्क्स ने स्तरीकरण की सभी प्रणालियों में दो मुख्य स्तरों के लिए 'वर्ग' शब्द का प्रयोग किया है। जैसा कि हमने पीछे उल्लेख किया है, सभी स्तरित समाजों में मुख्यत: दो बड़े सामाजिक समूह होते हैं–एक शासक वर्ग और दूसरा शाषित वर्ग। शासक वर्ग को शक्ति या सत्ताधिकार उत्पादन के साधनों पर अधिकार करने से हासिल होता है। इस तरह यह अन्य वर्गों के श्रम के फल को हथिया लेने में सक्षम रहता है। *द एटीन्थ ब्रुमेयर ऑफ लुई बोनापार्ट* में मार्क्स वर्ग का वर्णन इस प्रकार करते हैं: "जब लाखों लोग अस्तित्वभर आर्थिक दशा में जी रहे हों, जो उनकी जीवन शैली, उनके हित और संस्कृति को अन्य वर्गों के लोगों से अलग करती हो और उन्हें इन वर्गों के द्वेषपूर्ण विरोध में ला खड़ा करती हो, तो ऐसे लोग एक वर्ग बन जाते हैं।"

अभ्यास 1

अपने परिचित लोगों से वर्ग के अभिप्राय पर चर्चा कीजिए। इसमें आपको वर्ग की जो व्याख्याएं जानने को मिलती हैं उन्हें नोट कर लीजिए । अब इन व्याख्याओं की तुलना मार्क्स की वर्ग अवधारणा से कीजिए।

मार्क्स के अनुसार स्तरीकरण की व्यवस्था उत्पादन की शक्तियों से सामाजिक समूहों के संबंधों से उत्पन्न होती है। मार्क्स ने वर्ग शब्द का प्रयोग स्तरीकरण की सभी पद्धतियों में मुख्य स्तरों के लिए किया था। वर्ग की उन्होंने जो परिभाषा दी है, उसकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं। इस परिभाषा के अनुसार वर्ग में दो मुख्य समूह होते हैं जिनमें से एक उत्पादन के साधनों पर अधिकार किए रहता है। सामाजिक अर्थव्यवस्था में इसे विशिष्ट दर्जा हासिल होने के कारण यह वर्ग अन्य वर्ग के श्रम के फल को हथिया लेता है। इस प्रकार वर्ग एक सामाजिक समूह है, जिसके सदस्यों का उत्पादन शक्तियों से एक साझा संबंध होता है। यह दरअसल एक वर्ग के दूसरे वर्ग से अलग करता है।

मार्क्स की इस परिभाषा से हमें वर्ग का एक और पहलू यह दिखाई देता है कि वर्ग एक दूसरे के विरोध में खड़े होते हैं। मगर साथ-साथ वर्गों में परस्पर निर्भरता का संबंध भी होता है। अगर एक वर्ग उत्पादन के साधनों पर अपने अधिकार के बूते दूसरे वर्ग के श्रम को हथिया सकता है तो इसका यही मतलब है कि दोनों वर्ग एक दूसरे पर निर्भर तो हैं ही, मगर वहीं वे परस्पर विरोधी भी हैं। वर्गों के बीच यह संबंध एक परिवर्तनकारी संबंध है जिसकी परिणति सामाजिक परिवर्तन में होती है। यही कारण है कि मार्क्स की दृष्टि में वर्ग ही सामाजिक कायापलट की धुरी हैं। *कम्युनिष्ट मैनिफेस्टो* में मार्क्स लिखते हैं: "अभी तक, सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" दूसरी तरह से कहें, तो मानवजाति के इतिहास में वर्गों के संघर्ष के कारण परिवर्तन आते हैं। इसलिए वर्ग द्वंद्व सामाजिक बदलाव का इंजन है।

बोध प्रश्न 1

1) श्रम के विभाजन के बारे में मार्क्स के क्या विचार हैं? पांच पंक्तियों में बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

2) मार्क्स के अनुसार वर्ग का क्या मतलब है? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए

....

....

....

....

....

5.2.3 वर्ग का विकास

समाज का विकास वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया के जरिए होता है। एक वर्ग का किसी अन्य वर्ग पर प्रभुत्व होने के कारण ही वर्ग द्वंद्व उत्पन्न होता है। इसके साथ-साथ प्रौद्योगिकी में आने वाले परिवर्तनों के कारण उत्पादन की प्रक्रिया भी विकसित होती है, जिसके फलस्वरूप वह उन्नत होती जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि वर्गीय ढांचे में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि उत्पादन तकनीकों में वृद्धि होने के कारण मौजूदा वर्ग अपनी प्रासंगिकता खो देते हैं। इससे नए वर्गों की रचना होती है जो पुराने वर्गों का स्थान ले लेते हैं। इससे वर्ग संघर्ष और बढ़ता है। मार्क्स के मतानुसार पश्चिमी समाजों का विकास मुख्यत: चार चरणों में हुआ: आदिम साम्यवाद, प्राचीन समाज, सामंतवादी समाज और पूंजीवादी समाज। आदिम साम्यवाद के चरण के प्रतिनिधि प्रागैतिहासिक समाज हैं, शिकार और भोजन संग्रहण पर निर्भर करते हैं और जिनमें श्रम का कोई विभाजन मौजूद नहीं है। इस चरण के बाद सभी समाज मुख्यत: दो वर्गों में बंटे होते हैं: प्राचीन समाज में ये स्वामी और दास, सामंतवाद समाज में ये जमींदार और कृषिदास (काश्तकार) और पूंजीवादी समाज में ये पूंजीवादी और वैतनिक श्रमिक हैं। प्रत्येक युग में उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम शक्ति की पूर्ति शासित वर्ग यानी दास, कृषिदास और वैतनिक श्रमिक वर्ग ही करता था।

परस्पर विरोधी समूहों में वर्गों का ध्रुवीकरण वर्गीय चेतना का परिणाम है। यह एक अलग मगर वर्ग से ही जुड़ा प्रसंग है। वर्गीय चेतना अनिवार्यत: वर्ग-रचना का परिणाम नहीं होती। वर्गीय चेतना का संबंध वर्गों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया से है। अपने वर्गीय हितों के जाने बगैर भी एक वर्ग अस्तित्व में हो सकता है।

बॉक्स 5.01

किसी खास समूह के लोग, जिसकी सदस्यता उत्पादन के ऐसे संबंधों से तय होती है जिनमें या तो वे जन्म लेते हैं या स्वेच्छा से प्रवेश करते हैं, जब वे एक विशिष्ट या भिन्न समूह के रूप में अपने अस्तित्व के बारे में सजग हो जाते हैं तो उन्हें अपने वर्ग के प्रति चैतन्य माना जाता है। उदाहरण के लिए, मजदूर अपनी मजदूरी बढ़ाने के लिए बराबर संघर्षरत रहते हैं जो उनके हित में है। ये हित पूंजीवादी समाज के आर्थिक संबंधों के परिणाम हैं। ये हित वस्तुनिष्ठ रूप से विद्यमान होते हैं, जिसका यह अर्थ है कि इन हितों को कोई सिद्धांत राजनीतिक दल, मजदूर संघ या इस तरह की कोई बाहरी शक्ति ईजाद नहीं करती है। मगर इन वस्तुनिष्ठ स्थितियों का विद्यमान रहना ही पर्याप्त नहीं होता। कामगारों को इन स्थितियों के बारे में जागरूक होना चाहिए।

एटीन्थ ब्रुमेयर ऑफ लुई बोनापार्ट के निष्कर्ष में मार्क्स वर्ग निर्माण की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि एक वर्ग तभी अपने अस्तित्व के प्रति सचेत होता है, जब वह अन्य वर्ग से अपने विरोध के प्रति जागरूक हो। अपने सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ *दास कैपिटल* में मार्क्स कहते हैं कि अगर श्रमिकों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए तो हो सकता है कि वे इस बात से अनभिज्ञ रहें कि उनके वर्गीय हित अन्य वर्ग (पूंजीवादी वर्ग) के हितों के प्रतिकूल हैं। उन्होंने कहा है कि पूंजीवादी उत्पादन में उन्नति एक ऐसा श्रमिक वर्ग खड़ा करता है जो अपनी शिक्षा, परंपरा और स्वभाव से उत्पादन की स्थितियों को प्रकृति के स्वयंसिद्ध नियमों के रूप में देखता है। यानी वह उन्हें स्वाभाविक, प्रकृति-सममत मानता है साधारण स्थितियों में श्रमिक को स्वयंसिद्ध नियमों के रूप में उत्पादन के प्राकृतिक नियमों के हवाले किया जा सकता है साधारण स्थितियों में श्रमिक को उत्पादन के प्राकृतिक नियमों के हवाले किया जा सकता है।
वर्ग चेतना के किससित होने पर वर्ग संबंधों की यह गतिहीन प्रकृति एक गतिशील और परिवर्तनकारी

स्वरूप धारण कर लेती है। वर्ग चेतना के बिना श्रमिक वर्ग पूंजी के संबंध में श्रमिक वर्ग बन के रह जाता है। यह अपने-आप में एक वर्ग मात्र है। *द पॉवर्टी ऑफ फिलॉसफी* में मार्क्स कहते हैं कि जो श्रमिक वर्ग इस स्थिति में रहता हो वह व्यक्तियों का एक समूह मात्र है और अपने-आप में एक वर्ग है। यह जब अपने संघर्ष में पूंजीवाद के खिलाफ संगठित हो जाता है तो यह "अपने लिए एक वर्ग का स्वरूप धारण कर लेता है, जिन हितों की यह रक्षा करता है। वे इस वर्ग के हित बन जाते हैं।"

मार्क्सवादी ढांचे में इस प्रकार हम वर्ग को एक गतिशील, परिवर्तनकारी इकाई के रूप में पाते हैं। प्रौद्यागिकी में उन्नति के साथ-साथ इसके स्वरूप में भी बदलाव आ सकता है, मगर इसकी रचना का आधार वही रहता है। वर्ग किसी भी समाज में स्तरीकरण पद्धति का मुख्य आधार है। वर्ग का सीधा संबंध हर समाज में प्रचलित उत्पादन प्रक्रिया से है। वर्गीय ढांचे में बदलाव उत्पादन प्रक्रिया में बदलाव होने से आता है। इस प्रकार समाज में स्तरीकरण की व्यवस्था उत्पादन संबंधों पर निर्भर होते हैं।

5.3 सामाजिक स्तरीकरण और वेबर

जैसा कि हमने शुरू में जिक्र किया है, मैक्स वेबर को समाजशास्त्र के संस्थापकों के रूप में जाना जाता है। वे समाज के मार्क्सवादी सिद्धांत के सबसे शक्तिशाली विकल्प के जनक माने जाते हैं। इकाई के इस भाग में हम वर्ग और सामाजिक स्तरीकरण के अन्य स्वरूपों पर उनके विचारों पर चर्चा करेंगे।
मार्क्स की तरह वेबर का भी मानना था कि वर्ग ही समाज में स्तरीकरण का बुनियादी रूप है। उन्होंने वर्ग की व्याख्या मार्क्सवादी कसौटी मुख्यत: संपत्ति के स्वामित्व के रूप में की। उनके अनुसार इस की बुनियादी श्रेणियां हैं। उन्होंने संपत्ति-स्वामित्व और उत्पादों व सेवाओं की स्वामित्वहीनता के जितने प्रकार होते हैं, उनमें भेद दर्शाया। जो लोग संपत्ति के स्वामी होते हैं वे उत्पादन या वस्तुएं देते हैं, लेकिन जिन लोगों के पास कोई संपत्ति नहीं होती वे सिर्फ अपनी श्रम शक्ति या प्रवीणता ही पेश कर सकते हैं। इस प्रकार कारखाने का मालिक अपने कारखाने में बनने वाले माल की पेशकश कर सकता है मगर दूसरी ओर उसके मजदूर पारिश्रमिक के बदले में सिर्फ अपनी श्रमशक्ति ही दे सकते हैं।

भवन निर्माण में कार्यरत मज़दूर
साभार : ए. यादव

5.3.1 वर्ग और जीवन-अवसर

वेबर ने वर्ग के एक अन्य पहलू को महत्व दिया है। वह है जीवन-अवसर। इस शब्द का अर्थ उन अवसरों से है जो किसी व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को अपने जीवन के विभिन्न चरणों में मिलते हैं। एक श्रमिक के परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्ति को एक खास किस्म की शिक्षा मिलती है, जो उसे विशिष्ट कार्यों के लिए सक्षम बनाती है। यह शिक्षा उतनी महंगी या गहरी नहीं होगी जो उच्च वर्गीय परिवार में जन्में बच्चे को मिलती है। इसलिए रोजगार के अवसर दोनों के लिए एक दूसरे से अलग-अलग होंगे। उनकी भिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि भी उन्हें भिन्न वर्गों का हिस्सा बनाती है। ठीक यही पैटर्न हमें उनके सामाजिक व्यवहार और विवाह में मिलता है। श्रमिक वर्ग की पृष्ठिभूमि का व्यक्ति अधिकतर अपने वर्ग के अन्य सदस्यों से ही परस्पर व्यवहार करता है, जबकि उच्च मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति के परिचित, मित्र अपने वर्ग के ही लोग होंगे। इस प्रकार वेबर के अनुसार जीवन-अवसर वर्ग-निर्माण का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं।

बॉक्स 5.02

जीवन-अवसरों का विवेचन करते समय वेबर ने व्यक्ति के बजाए समूह या समुदाय पर बल दिया था। उनका कहना था कि वर्ग का निर्धारण करते समय हमें समूह के जीवन-अवसरों को देखना होगा न कि समूह के भीतर अलग-अलग व्यक्तियों के जीवन अवसरों को देखना होगा। एक समूह के रूप में वर्ग का यह अति महत्वपूर्ण पहलू है। यह संभव है कि एक व्यक्ति के जीवन-अवसर दूसरों से बिल्कुल भिन्न हों। उदाहरण के लिए, किसी कामगार का बच्चा अपने वर्ग के अवरोधों को पार कर सकता है। उसे बेहतर शिक्षा और ऐसा रोजगार मिल सकता है जो उसके संगी-साथियों को प्राप्त अवसरों से भिन्न हो।

एक उद्योगपति का बेटा अपनी योग्यता या अन्य स्थितियों के चलते श्रमिक बन सकता है। मगर ऐसा अपवाद स्वरूप ही होता है। उनके विचार में महत्वपूर्ण बात यह है कि एक ही वर्ग के सदस्यों के लिए जीवन-अवसर समान होते हैं। यही उस वर्ग को स्थायित्व प्रदान करता है क्योंकि आगे की पीढ़ी के अनुसार जीवन-अवसरों की परिभाषा उपलब्ध आर्थिक और सांस्कृतिक वस्तुओं को आपस में बांटना है जो भिन्न समूहों को भिन्न-भिन्न तरीके से सुलभ हैं।

किसी व्यक्ति के सुलभ होने वाले जीवन-अवसर मोटे तौर पर बाजार-स्थिति से तय होते हैं। एक श्रमिक का बेटा श्रमिक ही बनता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि के अनुसार यही उसके लिए सबसे उपयुक्त विकल्प है। संपत्तिहीन लोगों के लिए बाजार-स्थिति और महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उन्हें मुख्यत: सेवाओं के उत्पादन पर ही निर्भर रहना पड़ता है जिसका कारण यह है कि उनके पास सिर्फ अपनी प्रवीणता होती है, अपने अस्तित्व के लिए उनके पास अपनी प्रवीणता को बेचने के अलावा कुछ भी नहीं होता। मगर वहीं संपत्ति के स्वामी अपनी उत्पादक संपत्ति से होने वाली आमदनी पर आश्रित रह सकते हैं।

इस प्रकार वेबर के अनुसार वर्ग के दो बुनियादी पहलू हैं। पहला यह एक वस्तुगत श्रेणी है। उत्पादक संपत्ति पर सदस्यों के अधिकार एक विशेष वर्ग के सभी सदस्यों को समान जीवन-अवसरों से अलग करते हैं। व्यक्तियों के जीवन अवसर उन लोगों के लिए बाजार-स्थिति पर निर्भर करते हैं जो उत्पादक संपत्ति के स्वामी नहीं हैं। जिन लोगों के पास ऐसी संपत्ति है उनके जीवन-अवसर उत्पादकता के स्वामित्व से तय होते हैं।

अपनी इस परिभाषा के आधार पर वेबर ने पूंजीवादी समाज को चार वर्गों में बांटा है। ये इस प्रकार हैं: (i) उच्च वर्ग, जिसमें वे लोग आते हैं, जिनके स्वामित्व या अधिकार में उत्पादक संपत्ति है। यह वर्ग मार्क्स के बुर्जुवा (पूंजीवादी वर्ग) के समान है। (ii) सफेदपोश श्रमिक (व्हाइट कॉलर वर्कर्स): इस वर्ग में मानसिक श्रम करने वाले लोग शामिल हैं–प्रबंधक, प्रशासक, पेशेवर (प्रोफेशनल) इत्यादि लोग। (iii) टटपुंजिया या छोटा बुर्जुवा: इस वर्ग में स्वरोजगार में लगे लोग आते हैं जैसे दुकानदार छोटे व्यापारी, डॉक्टर, वकील इत्यादि। (iv) शारीरिक श्रमिकों का वर्ग–ये लोग दिहाड़ी या वेतन के बदले में अपना शारीरिक श्रम बेचते हैं। श्रमिक वर्ग को वेबर ने इसी वर्ग में शामिल किया है। इस प्रकार वेबर ने

मार्क्स के दो-वर्गीय मॉडल के विपरीत समाज को चार वर्गों में विभाजित किया। हालांकि वेबर ने वर्ग संरचना का जो आधार ढूंढा वह मार्क्स के जैसा ही था, मगर समाज में वर्गों के प्रकार को लेकर उनका नजरिया मार्क्स से भिन्न था।

5.3.2 स्थिति या हैसियत

मार्क्स की तरह वेबर ने भी वर्ग और वर्ग चेतना में भेद किया था। जैसा कि हमने पीछे बताया है, मार्क्स के लिए वर्ग-चेतना वर्ग का एक महत्वपूर्ण पहलू था। कोई वर्ग अगर यह जानता है कि वह एक विशिष्ट वर्ग है तो वह अपने हितों की पैरवी कर सकता है। वेबर ने भी वर्ग-चेतना की बात तो की है मगर वह वर्ग के अस्तित्व के लिए इसे जरूरी नहीं मानते। बल्कि इसके बजाए वह वर्ग-चेतना का विकल्प स्थिति या हैसियत में ढूंढते हैं। वेबर का मानना था कि एक व्यक्ति की वर्ग-स्थिति जरूरी नहीं कि उसे वर्ग-चेतन बनाए, मगर वह अपनी हैसियत, अपनी स्थिति के बारे में पहले से चेतन रहता है।

अभ्यास 2

अपने अध्ययन केन्द्र में सहपाठियों से चर्चा कीजिए कि स्थिति/हैसियत का क्या मतलब है। क्या उनकी धारणाएं स्थिति पर वेबर के दृष्टिकोण से मेल खाती हैं? अपनी जानकारी को नोटबुक में दर्ज कर लीजिए।

वेबर के अनुसार वर्गों की रचना आर्थिक संबंधों के आधार पर होती है, उनके अनुसार स्थिति (स्टेटस) समूह साधारणतया 'समुदाय' होते हैं। वेबर ने स्थिति को समाज में व्यक्ति को हासिल स्थिति के रूप में की है जो 'प्रतिष्ठा' के सामाजिक मूल्यांकन से निर्धारित होती है। वर्ग और हैसियत परस्पर जुड़े होते हैं मगर कई स्थितियों में ये एक-दूसरे के विरोध में जा खड़े होते हैं। वर्ग का संबंध वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन या उनके अर्जन से है। हैसियत या स्थिति उपभोग से तय होती है। इस प्रकार हैसियत का संबंध जीवन-शैली से है, जिसमें सामाजिक सहवास पर अंकुश लगे हों। वेबर का कहना था कि सबसे कठोर और सु-परिभाषित स्थितिगत सीमाएं हम भारत की वर्ण-व्यवस्था में देख सकते हैं। एक ब्राह्मण का संबंध श्रमिक वर्ग से हो सकता है, क्योंकि यह उसकी आजीविका का माध्यम है। मगर वहीं वह अपने आपको छोटी जाति के व्यक्ति से श्रेष्ठ समझता है। हालांकि दोनों की वर्ग-स्थिति समान होगी। यही नहीं इस ब्राह्मण श्रमिक का अपने से उच्च वर्ग के ब्राह्मणों से सामाजिक व्यवहार काफी ज्यादा हो सकता है। भारतीय समाज में अंतरजातीय विवाह को स्वीकार नहीं किया जाता है। हालांकि दोनों परिवार एक वर्ग के होंगे मगर वर्ण क्रम-परंपरा में उनकी हैसियत एक-दूसरे से भिन्न होगी।

वेबर के अनुसार एक स्तरित समाज में संपत्ति में अंतर वर्गों को जन्म देते हैं, वहीं प्रतिष्ठा संबंधी भेद स्थिति समूहों को जन्म देते हैं। इस प्रकार सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य दो आधार हैं।

5.4 मार्क्स और वेबर में समानताएं और अंतर

उपरोक्त चर्चा से हमें स्पष्ट हो जाता है कि समाजशास्त्र के इन दोनों धुरंधर विद्वानों के सामाजिक स्तरीकरण के मत में कुछ समानताएं हैं, मगर वहीं दोनों में बड़े मतभेद भी हैं। मार्क्स के लिए सामाजिक स्तरीकरण का आधार वर्ग है। वर्ग की रचना इस अर्थ में वस्तुनिष्ठ होती है कि वर्ग का निर्माण महज इसलिए नहीं हो जाता है कि लोगों का एक समूह इकट्ठा होकर वर्ग बनाने का फैसला कर लेते हैं, बल्कि वर्ग का निर्माण समाज में प्रचलित उत्पादन संबंधों के कारण होता है। इसलिए वर्गीय ढांचे में किसी व्यक्ति को प्राप्त स्थान उत्पादन संबंधों में उसकी स्थिति पर आधारित होता है। अगर उसके पास पूंजी है या वह पूंजी पर अधिकार रखता है और दूसरे लोगों से काम लेता है तो वह पूंजीवादी है। जिन लोगों के पास संपत्ति नहीं होती वे उसके विरोधी श्रमिक वर्ग की रचना करते हैं। मार्क्स के विश्लेषण का महत्वपूर्ण पहलू वर्गों का परस्पर विरोध है। इसी विरोध के फलस्वरूप ही सामाजिक और आर्थिक बदलाव होता है। श्रमिकों के जवाब में पूंजीवादी नित नई तरकीबें ढूंढ निकालते हैं। जैसे वे नई प्रौद्योगिकी ला सकते हैं जिसके फलस्वरूप उत्पादन तकनीक उन्नत हो जाती हैं या श्रमिकों को शक्तिशाली बनने से रोकने के लिए वे नए कानून ला सकते हैं।

मगर श्रमिक भी अपने संघर्ष में उतना ही अधिक संगठित रहते हैं। वे जब देखते हैं कि उनका मुख्य शत्रु कोई अन्य वर्ग का है तो वे आपसी मतभेद भुला देते हैं। इससे उनमें व्यापक एकता आती है। इस प्रकार मार्क्स के मत में वर्ग और वर्ग-चेतना समाज की श्रेणियां मात्र नहीं हैं। ये सामाजिक विकास की बुनियाद हैं।

एक स्तर पर वेबर भी मार्क्स की वर्गीय धारणा से सहमति रखते हैं। मगर ऐसा वह मार्क्स का समर्थन करने के लिए नहीं बल्कि उनके मत की कमजोरियाँ निकालने के लिए करते हैं। वह जोर देकर कहते हैं कि समाज को सिर्फ दो मुख्य वर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता है, बल्कि समाज इनसे ज्यादा वर्गों में बंटा होता है जिनका उदय बाजार स्थिति और व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्य की किस्म से होता है। इसलिए उनके अनुसार समाज में मुख्य चार वर्ग होते हैं। उनके अनुसार इससे वर्ग संबंधों को लेकर भ्रम की स्थिति पैदा होती है। इसलिए वेबर कहते हैं कि न तो वर्ग और न ही वर्ग चेतना सामाजिक स्तरीकरण की पूर्ण व्याख्या कर सकते हैं। अतः वह स्थिति या हैसियत ('स्टैटस') पर अधिक बल देते हैं जबकि मार्क्स वर्ग-चेतना को अधिक महत्व देते हैं। वेबर ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि वर्ग चेतना सामाजिक स्तरीकरण के लिए महत्वपूर्ण नहीं है। उनके विचार में इसका आधार स्थिति समूह हैं। उनके अनुसार वर्ग स्थिर और गतिहीन होते हैं जबकि स्थिति (स्टैटस) सभी वर्गों की दूरी को मिटा देती है।

दोनों दार्शनिकों की तुलना करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि वेबर मार्क्स के विचारों के विरोधी थे। उन्होंने मार्क्स का विकल्प देने का प्रयास किया। सो दोनों दार्शनिकों की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि वेबर का कार्य मार्क्स के कार्य का पूरक, उसकी कड़ी नहीं है (जिस प्रकार डेविस की स्तरीकरण की अवधारणा पारसंस की अवधारणा की पूरक है, जिसे हम आगे की इकाई में दिखाएंगे)। वेबर ने अपने सिद्धांत को मुख्यतः मार्क्स के विरोध में गढ़ा था। इस लिए दोनों में कुछ समानताएं तो हैं मगर उनका आधार एक-दूसरे से भिन्न है।

बोध प्रश्न 2

1) वर्गों और जीवन-अवसरों के बारे में वेबर ने क्या विचार रखे थे? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) सामाजिक स्तरीकरण को लेकर वेबर और मार्क्स के दृष्टिकोण में क्या-क्या समानताएं और अंतर हैं? दस पंक्तियों में बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

5.5 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजिक स्तरीकरण पर समाजशास्त्र के दो संस्थापकों कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर के दृष्टिकोणों पर चर्चा की। दोनों दार्शनिकों के विचारों ने मानव विकास को बेहद प्रभावित किया है। कार्ल मार्क्स के विचार उनके ऐतिहासिक भौतिकतावाद पर आधारित थे। उन्होंने सामाजिक स्तरीकरण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा। उनके अनुसार मानव समाज में होने वाले परिवर्तनों का आधार उत्पादन का बदलता स्वरूप है। वर्ग समाज में स्तरीकरण व्यवस्था का आधार हैं। उत्पादन संबंधों के बदलने पर स्तरीकरण का स्वरूप भी बदल जाता है। इस तरह नए वर्गों ने पुराने वर्गों की जगह ले ली। इसके फलस्वरूप वर्गों के बीच नए संबंध भी बने। इसलिए मार्क्स की दृष्टि में वर्ग और स्तरीकरण समरूप हैं। मार्क्स ने वर्ग-चेतना की भूमिका को वर्ग हितों की साधना के लिए महत्वपूर्ण माना है।

दूसरी ओर मैक्स वेबर ने वर्गों के निर्माण को अधिक महत्व दिया। उनके विचार में भी वर्ग का आधार वही था जो मार्क्स ने माना था। मगर वहीं उनका मानना था कि समाज दो के बजाए चार वर्गों में बंटा होता है। वेबर और मार्क्स में यह मतभेद यही नहीं है। वेबर ने सामाजिक स्तरीकरण की व्याख्या के मुख्य आधार के रूप में वर्ग विश्लेषण की कमियों को बताने का प्रयास भी किया। उनका मानना था कि वर्ग से अधिक महत्वपूर्ण स्थिति ('स्टैटस') होती है। उनका यह तर्क था कि लोग वर्ग-चैतन्य के बजाए स्थिति-चैतन्य अधिक होते हैं। इसलिए उनका विचार था कि हालांकि वर्ग एक वस्तुनिष्ठ श्रेणी है मगर सामाजिक स्तरीकरण को हम स्थिति/हैसियत की कसौटी पर बेहतर समझ सकते हैं।

5.6 शब्दावली

वर्ग : मार्क्स के अनुसार वर्ग लोगों का समूह है जो उत्पादन साधनों पर अपने अधिकार या स्वामित्व या उसकी कमी के कारण एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। मगर वेबर के अनुसार वर्ग लोगों का समूह है जो उत्पादन स्वामित्व या अधिकार के चलते एक दूसरे से अलग होते हैं और जिन्हें समान जीवन-अवसर प्राप्त होते हैं।

वर्ग-चेतना : एक वर्ग में यह चेतना कि सामाजिक क्रम-परंपरा में उसकी विशिष्ट जगह है।

स्थिति/हैसियत : सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रभावशाली दावा। वेबर ने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि स्थिति/हैसियत वर्ग अवरोधों को पार कर लेती है।

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

टी.बी. बोटोमोर और एम रुबेल (संपा.) *कार्ल मार्क्स: सेलेक्टेड राइटिंग्स इन सोशियोलाजी ऐंड सोशल फिलॉसफी*, पेंग्विन बुक्स, 1963

एच.एच. गर्थ और सी.डब्लू मिल्स (संपा.) *फ्रॉम मार्क्स वेबर: एसेज इन सोशियोलॉजी*, रौटलेज ऐंड केगर पॉल, 1948

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) में विकास होने के साथ-साथ उत्पादन भी उन्नत हुआ। इससे बेशी उत्पादन संभव हुआ और इसके फलस्वरूप क्रियाकलापों का वर्गीकरण यानी श्रम का विभाजन हुआ। इसका एक परिणाम यह भी रहा है कि उत्पादन के साधनों पर चंद लोगों का अधिकार हो गया जिससे निजी संपत्ति का प्रादुर्भाव हुआ। मार्क्स के अनुसार इससे लोगों के हित सामुदायिक हितों से अलग हो गए और इस प्रकार समाज में वर्गों का उदय हुआ।

2) मार्क्स के अनुसार स्तरीकरण व्यवस्था में दो मुख्य स्तर होते हैं। इनमें एक शासक वर्ग और दूसरा शासित वर्ग है। उत्पादन के साधन शासक वर्ग के अधिकार में रहते हैं जिसके बूते यह वर्ग श्रमिक वर्ग के श्रम को हथिया लेता है। अंततः ये वर्ग एक दूसरे के विरोधी होते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) वेबर ने वर्ग को निजी संपत्ति की कसौटी पर परिभाषित किया मगर उन्होंने वस्तुओं के स्वामित्व और प्रवीणता के स्वामित्व भेद किया। कारखाने का मालिक वस्तुएं देता है लेकिन उसके श्रमिक वेतन के बदले में अपनी श्रम शक्ति दे सकते हैं। वेबर के अनुसार जीवन-अवसरों का मतलब व्यक्ति को अपने जीवन के विभिन्न चरणों में प्राप्त होने वाले अवसर हैं। शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठिभूमि जीवन-अवसरों को प्रभावित करते हैं। मगर जोर समूह पर होना चाहिए और ये उन्हें सुधार या बिगाड़ सकते हैं। जीवन-अवसर एक वर्ग विशेष के लिए समान होते हैं पर इसके अपवाद अवश्य देखे जा सकते हैं।

2) सामाजिक स्तरीकरण को लेकर मार्क्स और वेबर में वैचारिक समानता और मतभेद दोनों हैं। मार्क्स के विचार के मूल में उत्पादन साधनों के स्वामित्व पर आधारित वर्ग विरोध है। उनके अनुसार वर्ग और चेतना सामाजिक विकास के लिए आवश्यक हैं। वेबर के अनुसार समाज को सिर्फ दो वर्गों में ही नहीं बांट सकते। बल्कि उनके अनुसार हमारा समाज चार वर्गों में बंटा हैं वेबर स्थिति/हैसियत को तो मार्क्स वर्ग चेतना को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार दोनों दार्शनिक वर्ग को महत्व तो देते हैं मगर दोनों के विचार समान नहीं हैं।